आधुनिक काव्य खंड का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कक्षा 11 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *अंतरा* के संदर्भ में

अरुंधति*

पाठ्यपुस्तक में चयनित रचनाओं का गुणात्मक प्रभाव विद्यार्थी पर पड़ता है। अन्य विषयों की अपेक्षा साहित्य एक ऐसा विषय है जो विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने में मार्गदर्शन प्रदान करता है तथा उन्हें विवेकशील बनाता है। साहित्य का संबंध भाषा विशेष के साथ संबद्ध होने के साथ-साथ उस भाषिक समाज के विभिन्न पहलुओं से भी होता है। इस तरह साहित्यिक अध्ययन पाठक के मानसिक स्तर पर गहरा एवं दूरगामी प्रभाव डालने में सक्षम होता है। विशेषकर जब विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं तब वह स्वयं अध्ययन कर निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर लेते हैं। किशोरावस्था में संवेगात्मक बदलाव होने के कारण किशोरों में विभिन्न भावों का उदय होता है एवं इस अवस्था में ऊर्जा एवं उत्साह के कारण किशोरों के अंदर रचनात्मकता का प्रकाश भी उदित होना आरंभ होता है। इसी अवस्था में किशोर सूक्ष्म अवलोकन करने की क्षमता विकसित करने के साथ उसे सृजनात्मकता के रूप में उत्पादित करना भी सीखते हैं। इसलिए पाठ्यपुस्तकों में निर्धारित साहित्यिक विषय-वस्तु का निश्चित रूप से विद्यार्थियों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। इस लेख में कक्षा 11 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'अंतरा' में आधुनिक काव्य खंड में जो कविताएँ निर्धारित की गई हैं, उनका किशोर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, इन्हीं कविताओं के माध्यम से कवि के संवेगों का भी मनोवैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

साहित्य का प्रभाव व्यक्ति के मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में साहित्य की जिन रचनात्मक रचनाओं का चयन किया गया है उनमें विद्यार्थियों की मानसिक संचेतना का ध्येय मौजूद है। इस लेख में हम पाठ्यपुस्तक के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का विश्लेषण करेंगे, लेकिन उससे पूर्व मनोविज्ञान के संदर्भ को समझना आवश्यक है। *इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ ब्रिटानिका* के अनुसार, मनोविज्ञान, एक वैज्ञानिक अनुशासन है जो मनुष्य एवं अन्य प्राणियों के मानसिक स्तर एवं प्रक्रियाओं तथा व्यवहार का अध्ययन करता है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक अध्ययन में हम विद्यार्थी के व्यवहार, मानसिक स्तर एवं रचनात्मक प्रक्रिया के विकास को

**शोधार्थी*, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, द्वितीय तल, मकान नं.-ए 158, गली-नं. 11, रोड-4 महिपालपुर, नयी दिल्ली 110037

समझ सकते हैं। इस लेख में इन्हीं घटकों को ध्यान में रखते हुए कक्षा 11 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण किया गया है। मनोविज्ञान ने बीसवीं शताब्दी में तेज़ी से मनुष्य के व्यवहार एवं व्यक्तित्व की परतों को समझने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के आधार पर अधिक सटीकता से विद्यार्थियों पर शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विचार कर सकते हैं। इस तरह हम जब मनोविज्ञान की दृष्टि से पाठ्यपुस्तक की समीक्षा करते हैं तब विद्यार्थियों पर उसके प्रभाव के औचित्य को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं।

किसी भी भाषा का अध्ययन न केवल उस भाषा के ज्ञान से संबंधित होता है, बल्कि उसके साथ-साथ उस भाषा समाज से जुड़ी तमाम सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक यात्रा का लेखा-जोखा भी इससे संबंधित होता है। *अंतरा* हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक जो कक्षा 11 के लिए निर्धारित की गई है, उसमें इन तमाम पहलुओं का ध्यान रखा गया है। कक्षा 11 में पढ़ने वाले विद्यार्थी किशोर अवस्था में होते हैं और इस कारण उनके भीतर ऊर्जा एवं उत्साह भी काफी होता है, यही वह समय होता है जब यह किशोर अपने समाज के प्रति एक समझ बनाना शुरू करते हैं। यहीं से उनकी अपनी धारणाएँ भी बननी शुरू हो जाती हैं जिससे वह अपने व्यक्तित्व को अपने चिंतन एवं समझ के आधार पर निर्धारित करना शुरू करते हैं। प्रसिद्ध रूसी विद्वान ए.वी. येत्रोव्सकी (1882) ने लिखा है, "किशोरावस्था में कदम रखने वाले बच्चे के व्यक्तित्व की संरचना में बुनियादी परिवर्तन उसकी आत्म चेतना में गुणात्मक प्रगति के कारण आते हैं। चेतना का विकास बच्चे और परिवेश के बीच पहले से चले आ रहे संबंधों को तोड़ देता है। किशोर के व्यक्तित्व की मुख्य और विशिष्ट नवनिर्मिति यह है कि वह सोचने लगता है कि वह अब बच्चा नहीं है।" कक्षा 11 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक *अंतरा* में आधुनिक काव्य खंड के अंतर्गत जिन कविताओं का चयन किया गया है, वह इस प्रभाव की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं और अपने समाज के प्रति चेतनशील होने के लिए इन किशोरों को आधार भूमि प्रदान करती हैं।

काव्य खंड में चयनित कविताओं में आधुनिक युग से सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, नरेंद्र शर्मा, नागार्जुन, श्रीकांत वर्मा और धूमिल की कविताओं का चयन किया गया है। सुमित्रानंदन पंत तथा महादेवी हिंदी काव्य के छायावाद कालखंड से जुड़े हुए कवि हैं, यह दौर 1918 से 1936 का दौर था जब स्वाधीनता संग्राम अपने चरम पर था। इस अवधि में हिंदी भी अपना नया रूप धारण कर रही थी। नरेंद्र शर्मा मशहूर गीतकार रहे हैं और उन्होंने अपने साहित्य की यात्रा छायावादोत्तर काल से आरंभ की और हिंदी गीत विधा में अपनी महत्वपूर्ण पहचान बनाई। नागार्जुन हिंदी कविता के प्रगतिवाद काल से रचनारत हुए और 90 के दशक तक सक्रिय रूप से कविता लिखते रहे। श्रीकांत वर्मा एवं धूमिल समकालीन कविता काल के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं जिन्होंने अपनी कविताओं में समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों एवं समस्याओं की अभिव्यक्ति की है। इस प्रकार से इस काव्य खंड में बीसवीं शताब्दी का लंबा कालखंड समाहित होता है तथा यह वह कालखंड है जब भारतीय समाज नए तरीके से ढलते हुए दिखाई देता है। स्वाधीनता संग्राम से पहले

© NCERT not to be republished

भारतीय समाज की सामाजिक सच्चाई एवं स्वतंत्रता मिलने के पश्चात् नए लोकतांत्रिक देश में बनती नई सामाजिकता, दोनों ही पक्ष इस कालखंड में निहित हैं। महत्वपूर्ण है कि हिंदी भाषा भी अपने आधुनिक रूप को छायावाद काल में ही परिपक्व बनाने की तरफ अग्रसरित हुई थी और सातवें-आठवें दशक तक आते-आते हिंदी भाषा का यह आधुनिक रूप न सिर्फ़ स्थापित हुआ, बल्कि यह विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र की मुख्य भाषा बनकर भी उभरी।

पाठ्यपुस्तक में जिन कविताओं का चयन किया गया है उस पर हम नज़र डालें तो एक-दो बिंदु बहुत महत्वपूर्ण दिखाई देते हैं— इन कविताओं में राष्ट्रीय चेतना भी दिखाई देती है, व्यक्तिगत पीड़ा एवं त्रासदी की अभिव्यक्ति भी है, प्रकृति का वर्णन भी है और राजनीतिक हस्तक्षेप एवं सामाजिक सच्चाई की अभिव्यक्ति भी मौजूद है। जब विद्यार्थी इस काव्य खंड का अध्ययन करते हैं तो वह भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं से परिचित होने के साथ-साथ ऐतिहासिक कालखंड में भाषा कैसे बन रही थी, कैसे वह समर्थ एवं परिपक्व हुई, साहित्य एवं भाषा का संबंध क्या है तथा साहित्य क्यों किसी भी समाज के लिए परिष्कार का कारण बनता है आदि विभिन्न पहलुओं से परिचित होते हुए चलते हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से इन पहलुओं का सकारात्मक प्रभाव किशोर मन पर देखा जा सकता है जहाँ किशोर स्वयं भी इस बात का विश्लेषण कर पाने में सक्षम हो पाता है कि साहित्य अपने समाज से किस प्रकार प्रतिफलित होता है एवं किस प्रकार आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करता है। ध्यातव्य है कि संज्ञानात्मक विकास की दृष्टि से आधुनिक युग के महान मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे ने इस अवस्था को अमूर्त चिंतन काल (*स्टेट ऑफ़ फ़ॉर्मल ऑपरेशनल 11–15 इयर्स ऐज*) कहा है। यह अवस्था मानसिक विकास के ऊर्ध्वगामी प्रक्रिया (*वर्टिकल डेकालेज*) की अवस्था है अर्थात् समस्याओं के समाधान में उच्च मानसिक स्तर की ओर मानसिक क्षमता उत्पन्न होती है। इस तरह इस आयु वर्ग के विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक में निर्धारित पाठ से विभिन्न निष्कर्षों को निकालने में सक्षम हो जाते हैं और वे सामाजिक रूप से अपनी विषय-वस्तु के अध्ययन से विभिन्न पहलुओं को विश्लेषित करने में भी सक्षम हो जाते हैं।

साहित्य की रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं रचनात्मक होने के लिए भी प्रेरित करती है तथा इसके साथ-साथ उनकी अपनी भाषा का भी परिष्कार करने में सहायता करती है। इस अवस्था में किशोर अपनी भाषा गढ़ते हैं, अपनी भाषा प्राप्त करने से यहाँ तात्पर्य है कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग भाषा एवं अभिव्यक्ति की संरचना होती है। यह अभिव्यक्ति शैली ही उसे अन्य व्यक्तियों से अलग बनाती है और जो व्यक्ति भाषा का निरंतर अभ्यास करता है एवं सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप भाषा व्यवहार करता है, भविष्य में वह उतनी ही सार्थक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति करता है। इस दृष्टि से पाठ्यपुस्तक की कविताएँ मज़बूत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, इन कविताओं में अपने समय के अनुरूप अभिव्यक्ति के साथ भाषा की उच्च दक्षता भी परिलक्षित होती है।

आधुनिक काव्य खंड के पहले कवि सुमित्रानंदन पंत हैं। जीवन में घटित होने वाले परिवर्तनों को दार्शनिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं।

© NCERT not to be republished

पंत अपने साहित्य की यात्रा के दौरान प्रगतिशील विचारधारा एवं अरविंद दर्शन दोनों से प्रभावित रहे। इन सभी वैचारिक यात्राओं का उनकी साहित्यक कृतियों पर भी प्रभाव देखा जा सकता है। *ग्राम्या* काव्य संग्रह से उनकी कविता 'संध्या के बाद' को पाठ्यपुस्तक में संकलित किया गया है। यह कविता संध्या के बाद ग्रामीण पृष्ठभूमि में, उस समाज विशेष में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों को बड़े प्रभावात्मक रूप से प्रस्तुत करती है। 'संध्या के बाद' इस मायने में एक बेहद महत्वपूर्ण कविता है जो विद्यार्थियों के समक्ष ग्रामीण जटिल जीवन को प्रस्तुत करने के साथ-साथ इस बात की ओर भी ध्यान आकर्षित करती है कि ग्रामीण समुदाय में विभिन्न स्तरों पर शोषण किस प्रकार होता है एवं क्यों ग्रामीण समाज सामुदायिक रूप से सुदृढ़ होने के बावजूद पिछड़ा ही रह जाता है? कविता में प्रकृति वर्णन चित्रात्मक एवं अत्यंत प्रभावी है, किंतु किशोर मनोविज्ञान की दृष्टि से यह कविता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें सामाजिक शोषण को चिह्नित किया गया है। यह कविता विद्यार्थियों को इस संदर्भ में सोचने के लिए प्रेरित करती है, कविता की बेहद महत्वपूर्ण पंक्तियाँ हैं—

कौड़ी की स्पर्धा में मर-मर!
फिर भी क्या कुटुंब पलता है?
रहते स्वच्छ सुघर सब परिजन?
बना पा रहा वह पक्का घर?
मन में सुख है? जुटता है धन?

इन काव्य पंक्तियों में कवि ने बनिया (बनिया, एक ऐसे वर्ग को कहा जाता है, जो सामान्यतः वाणिज्य एवं व्यवसाय से जुड़े होते हैं।) के माध्यम से शोषण करने वाले व्यक्ति के मनोभावों को उद्धृत किया है जो पैसे की चिंता में दिन-रात एक करने के बावजूद, परिवार का मनोवांछित भरण-पोषण नहीं कर पाता। कविता बनिया के आत्मचिंतन के माध्यम से यह प्रकट करने में सफल रही है कि तमाम जुगाड़ करने के बावजूद शोषक स्वयं किसी प्रकार की संतुष्टि प्राप्त नहीं कर पाता। इसके बावजूद वह शोषण का कोई भी अवसर त्यागता नहीं है। कविता मनुष्य के लालच और स्वार्थ की ओर भी ध्यान आकर्षित करती है। इस कविता के माध्यम से विद्यार्थियों में इस नैतिक मूल्य का प्रकाश अवश्य ही उत्पन्न होता है कि शोषक कभी भी शांति अथवा संतुष्टि को प्राप्त नहीं कर पाता। इस तरह यह कविता शोषणकारी व्यवस्थाओं का परिचय देते हुए समतामूलक समाज के महत्व को विद्यार्थियों के समक्ष प्रकट करती है। इस तरह साहित्यिक पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को उचित दिशा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आधुनिक काव्य खंड में कवयित्री महादेवी वर्मा की कविता 'जाग तुझको दूर जाना' एवं 'सब आंखों के आंसू उजले' संकलित की गई है। दोनों कविताएँ कालक्रम की दृष्टि से महत्वपूर्ण कविताएँ हैं और किशोरों को अपननी विषय-वस्तु के कारण आकर्षित करने का भी कार्य करती हैं। पहली कविता 'जाग तुझको दूर जाना' स्वाधीनता संग्राम के दौरान रचित कविता है जो देशप्रेम की भावना जाग्रत करती है। इस कविता के माध्यम से विद्यार्थी अपने स्वाधीनता संग्राम के महत्व को समझने के साथ-साथ साहित्यिक रचनाओं का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसको भी समझ सकते हैं। साहित्य सदैव

© NCERT not to be republished

से समाज को प्रेरित करने के साथ-साथ समसामयिक संघर्षों के प्रति जाग्रत करने का भी कार्य करता है। स्वाधीनता संग्राम के समय लिखे जा रहे साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना एक महत्वपूर्ण चेतना थी। इस चेतना ने पाठकों में अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को पहचानने एवं उनमें ऊर्जा भरने का कार्य किया, जिसे निम्न काव्य पंक्तियों में दिया गया है—

हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका,
रक्षक पतंग की है अमर दीपक की निशानी!
है तुझे अंगार शैया पर मृदुल कलियां बिछाना!
जाग तुझको दूर जाना!

महादेवी वर्मा इन काव्य पंक्तियों में स्पष्ट रूप से कहती हैं कि निराशा के घोर क्षणों में प्रकाश की प्रेरणा प्राप्त होती है अर्थात् दुःख से ही सुख की राह मिलती है। महादेवी वर्मा कविता की इन पंक्तियों में कहती हैं कि हार के बाद ही विजय मिलती है। दीपक पर जल मिटने वाला पतंगा भी अपने कर्तव्य-चेतना के कारण अमर हो जाता है, व्यक्ति भी संघर्ष की कठोर राह पर आगे बढ़ कर ही सफलता प्राप्त करता है। स्वाधीनता की राह अंगार शैया पर कलियों को बिछाने के समान है। संकट में स्वयं को कठिन परिस्थिति के अनुरूप ढालना होता है। इन काव्य पंक्तियों में स्पष्ट रूप से स्वाधीनता संग्राम में सामाजिक चेतना का आह्वान किया गया है, जो विद्यार्थियों को आज भी देश के प्रति उत्साहित एवं प्रेरित करती है। दूसरी कविता 'सब आंखों के आंसू उजले' हृदय की व्यथा की कविता कहा जा सकता है। इस कविता के माध्यम से विद्यार्थियों को संकट एवं संघर्ष काल में स्वयं को संभालते हुए अपने सपनों के प्रति मज़बूत रहने की प्रेरणा मिलती है।

इस पाठ्यपुस्तक में आधुनिक काव्य खंड के अंतर्गत तीसरे कवि के रूप में नरेंद्र शर्मा की रचनाओं को संकलित किया गया है। नरेंद्र शर्मा स्वाधीनता सेनानी होने के साथ-साथ फ़िल्मी गीतकार भी रहे एवं उनके गीतों की ख्याति बहुत अधिक थी। उनकी कविता 'नींद उचट जाती है' भी कठिन समय में संघर्ष के प्रति निष्ठावान बने रहने की कविता है। यह कविता प्रेरित करती है कि तमाम तरह के संकटों एवं समस्याओं के मध्य स्वयं को एकाग्र रखते हुए किस प्रकार संघर्ष को विजयी बनाना है। संघर्ष के दिनों में ऐसा समय आता है जब दुःख सबसे ज़्यादा बढ़ जाता है, तो दुःख के कारण कोई भी रास्ता नहीं सूझता है। कविता की निम्न पंक्तियाँ हैं—

करवट नहीं बदलता है तम,
मन उतावलेपन में अक्षम!
जागते अपलक नयन बावले,
थिर न पुतलियां, निमिष गए थम!
सांस सांस में अटकी, मन को
आज रात भर भटकाती है!

इन पंक्तियों में कवि यहाँ कहता है कि दुःख के घोर संकट में ऐसा लगता है कि अँधेरा कम ही नहीं होता, मन अक्षम हो गया है। दिन-रात अपलक है जीवन, मन की व्यथा चैन नहीं लेने देती और रात भर परेशानियों में घिरा महसूस होता है। मनुष्य दुःख में जब स्वयं को घिरा पाता है तब कभी-कभी वह मानसिक रूप से कमज़ोर हो जाता है, किंतु संघर्ष की यह व्यथा अंतिम नहीं है। निराशा में ही परिवर्तन की इच्छा भी छिपी होती है। इस कविता को पढ़ते हुए विद्यार्थी स्वयं भी अपने संघर्षों एवं अपने व्यक्तिगत दुखों के बारे में इस आलोक में सोच-समझ सकते

© NCERT not to be republished

हैं। किशोर विद्यार्थी जितना ज्ञान स्व-अवलोकन से प्राप्त करते हैं, उतना शायद शिक्षा से प्राप्त नहीं करते। इसलिए इस तरह की पाठ्यपुस्तक उन्हें यह विकल्प प्रदान करती है ताकि वह संवेग और बाह्य व्यवहार दोनों में संतुलन कर सके।

प्रसिद्ध कवि नागार्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा है' को इस पाठ्यपुस्तक में रखा गया है। प्रगतिशील चेतना के कवि नागार्जुन अपनी राजनीतिक कविताओं के लिए जाने जाते हैं। उनकी स्थानीय रंग में रंगी और प्रकृतिपरक कविताएँ भी हिंदी साहित्य में अपना अलग स्थान रखती हैं। 'बादल को घिरते देखा है' में प्रकृति का जो चित्र हमारे समक्ष उभरता है उसमें भारतीय संस्कृति एवं परंपरा से निर्मित सौंदर्य बोध की चेतना भी दिखाई देती है। एक दृष्टि से यह कविता प्रकृति वर्णन की कविता प्रतीत होती है लेकिन इसमें मनुष्य एवं प्रकृति के मध्य जीवन और सहचर्य एवं संतुलन का जो संबंध रहा है, उसे भी यह कविता प्रकट करती है। अपने सौंदर्य बोध की विशिष्टता के कारण विद्यार्थियों की दृष्टि से यह कविता भारत भूमि के गौरवशाली हिमालय के प्रति सौंदर्य बोध निर्मित करने के अतिरिक्त भाषा के स्तर पर किस प्रकार भाषा अपनी बनावट के कारण अत्यंत प्रभावी एवं सौंदर्यशाली हो जाती है, उसे भी प्रकट करने का कार्य करती है। यह कविता विद्यार्थी के अंदर सौदर्यबोध का भाव उत्पन्न करती है और कविता और जीवन के मध्य सुकोमल भाव के प्रभाव को भी स्थापित करती है। विद्यार्थी को सृजनात्मकता के लिए भी प्रेरित करती है। 'बादल को घिरते देखा है' कविता किशोर व मानसिक दृष्टि से जीवन के कोमल एवं रागात्मक पक्षों की ओर ध्यान आकृष्ट करने वाली कविता भी कही जा सकती है। हिंदी में जो भी कविताएँ तत्सम प्रधान शब्दावली में लिखी गई हैं, उनसे अकसर यह शिकायत रहती है कि वह सरल सौंदर्यबोध की उत्पत्ति नहीं कर पातीं। बादल को घिरते देखा है कविता इस मिथक को तोड़ती है। कविता में उपस्थित सौंदर्यबोध की परिचायक निम्न पंक्तियाँ हैं—

नरम निदाग बाल-कस्तूरी,
मृगछालों पर पलथी मारे
मदिरारुण आंखों वाले उन
उन्मद किन्नर-किन्नरियों की
मृदुल मनोरम उंगलियों को
वंशी पर फिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

इन पंक्तियों के माध्यम से नागार्जुन यहाँ वनजीवी संस्कृति का उल्लेख करते हैं कि वन में रहने वाले मुलायम, बिना दाग के हिरण छाल पर पालथी मारे बैठे हैं, उनकी आँखें मदिरा से सुंदर प्रतीत होती हैं, क्योंकि उनमें लालिमा है और हलके नशे में वो सुंदर नर-नारी जो नृत्य में झूम रहे हैं, वो अपनी सुंदर उंगलियों को वंशी पर फिरा रहे हैं अर्थात् उसे बजा रहे हैं। वनवासी बांसुरी बजा रहे हैं, संगीत और नृत्य में मगन हैं और ऐसे मनोरम स्थान पर बादल घिर आते हैं। हिमालय का वातावरण स्वर्गीय प्रतीत होने लगता है। नागार्जुन की इस कविता को पढ़ते हुए ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पारंपरिक एवं भाषिक व्यवहारों एवं उसके विभिन्न मानकों से भी विद्यार्थी परिचित होते हैं। इस मायने में 'बादल को घिरते देखा है' एक अत्यंत महत्वपूर्ण कविता है जो सकारात्मक प्रभाव डालती है।

© NCERT not to be republished

किशोर विद्यार्थियों में स्वयं सीखने की अद्भुत ऊर्जा होती है। अत: पाठ्यपुस्तक में निर्धारित की गई साहित्यिक रचनाएँ किशोर विद्यार्थियों को सोचने एवं संभावित परणिाम प्राप्त करने के लिए प्रेरित करनी चाहिए। श्रीकांत वर्मा की कविता 'हस्तक्षेप' मगध काव्य संग्रह का अंश है, यहाँ जो अंश लगाया गया है वह राजनैतिक विद्रूपताओं के खिलाफ़ मानसिक स्तर पर प्रतिरोध को संबोधित करने वाली कविता है। यह स्वतंत्रता के बाद उत्पन्न हुए मोहभंग को दर्शाती है। क्योंकि साहित्य का यह उत्तरदायित्व है कि वह अपने समय अथवा किसी भी काल में हो रहे उन जड़ता एवं प्रतिगामी स्थितियों को चिह्नित करे, जो समाज में अवरोध उत्पन्न करने का कार्य करते हैं। राजनीति में अकसर ऐसा होता है कि अपने स्वार्थ हेतु कुछ समूह मात्र संपूर्ण जनता के हितों को प्रभावित करने लगते हैं, ऐसे में यह जनता का ही कर्तव्य है कि वह ऐसी स्थितियों को पहचाने और उसके खिलाफ़ उठ खड़ी हो। हस्तक्षेप व्यंग्यात्मक स्वर की कविता है। कवि निम्न पंक्तियों में जनता की विमूढ़ता एवं कायरता को भी लक्षित करता है—

वैसे तो मगध निवासियों
कितना भी कतराओ
तुम बच नहीं सकते हस्तक्षेप से-
जब कोई नहीं करता
तब नगर के बीच से गुज़रता हुआ
मुर्दा
या प्रश्न कर हस्तक्षेप करता है-
मनुष्य क्यों मरता है?

इस कविता में कवि इस तरफ लक्षित करता है कि मगध राज्य के निवासियों कितना भी अपने आप को बचाकर चलना चाहो, किंतु राजनीति की अनीति का प्रभाव पड़ता ही है, यहाँ तक कि असमय मृत हुआ मुर्दा भी यह प्रश्न खड़ा करता है, क्यों उसे मरना पड़ा और यही से हस्तक्षेप की संभावना पैदा होती है। 'हस्तक्षेप' प्रतीकात्मक ढंग से राजनीति में आवश्यक हस्तक्षेप के समर्थन पर लिखी गई कविता है जो किसी भी काल की राजनीतिक जड़ता को संबोधित करती हुई प्रतीत होती है। किशोरावस्था में राजनीतिक संकटों को पहचानने लगते हैं, यह कविता इस आयु वर्ग को राजनीतिक जटिलताओं से परिचित कराने के साथ सामाजिक स्तर पर राजनीति का नैतिक स्वरूप भी प्रतिध्वनित करती है, इस दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण कविता कही जा सकती है।

पाठ्यपुस्तक के आधुनिक काव्य खंड में अंतिम संकलित कविता धूमिल की है। धूमिल अपने प्रखर राजनीतिक चेतना के लिए जाने जाते हैं एवं उनका देशज बोध भी बहुत स्पष्ट है। मध्यमवर्गीय चेतना भी बहुत प्रभावी रूप से उनकी कविताओं में प्रकट हुई है। पाठ्यपुस्तक में जो कविता संकलित हुई है, वह निम्न मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति को अभिव्यक्त करती है। आर्थिक विपन्नता किस तरह आत्मीय संबंधों में दूरी लाती है। उसे व्यक्त करते हुए कविता का अंश है—

रिश्ते हैं; लेकिन खुलते नहीं हैं
और हम अपने खून में इतना भी लोहा
नहीं पाते,
कि हम उससे एक ताली बनवाते
और भाषा के भुन्ना-सी ताले को खोलते

इन पंक्तियों में धूमिल लिखते हैं कि जीवन में संबंध हैं, किंतु व्यथाओं के कारण एक-दूसरे से

© NCERT not to be republished

अपना दुःख नहीं बाँटते और जीवन की मार इतनी गहरी है कि संबंधों में इतनी ऊष्मा भी शेष नहीं कि उससे सभी मिलकर इस सामूहिक समस्या का हल निकाल लें अर्थात् गरीबी मनुष्य को रिश्तों में भी अलग-थलग कर देती है। भारत में अधिकतर परिवार इस व्यथा से गुज़रते हैं। यह परिस्थितियाँ किसी भी परिवार को तोड़ देती हैं। परिवार में संबंधों की ऊष्मा कम होने लगती है। अपने-अपने अवसाद और दुःख के साथ परिवार का सदस्य स्वयं को अलग-थलग महसूस करने लगता है। उनकी आर्थिक स्थितियाँ उन्हें पारिवारिक तौर पर अकेलेपन एवं अवसाद की तरफ धकेलने का कार्य करती हैं। इस प्रकार यह कविता भारतीय परिवारों में आर्थिक विपन्नता की जो तसवीर प्रस्तुत करती है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। किशोरों के अंदर इस कविता से वर्गीय चेतना की समझ उत्पन्न होती है और वह अपने परिवार के मध्य मौजूद अंतर्विरोधों को समझ पाने में सफल होते हैं। कविता उनके अंदर सामाजिक सहिष्णुता का भाव भी उत्पन्न करती है।

निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि पाठ्यपुस्तक की आधुनिक काव्य खंड में जो कविताएँ संकलित हुई हैं, वह किशोरों को विभिन्न परिस्थितियों से परिचय करवाने के साथ उनके संवेगों को भी उद्वेलित करने का कार्य करती हैं। साहित्यिक पाठ्यपुस्तक भाषिक-ज्ञान के अतरिक्त मानसिक परिष्करण का कार्य करती है। ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों की आयु के अनुसार यह पाठ्यपुस्तक मनोवैज्ञानिक रूप से अत्यंत समर्थ पाठ्यपुस्तक कही जा सकती है। इस पाठ्यपुस्तक में हिंदी की साहित्यिक काव्य-यात्रा से परिचय करवाने के साथ ही यह हिंदी भाषिक सामाजिक संरचना से भी परिचित कराती है। पाठ्यपुस्तक में निर्धारित कविताओं की अंतर्वस्तु रुचि बनाए रखती है और किशोरों के अनुसार उनकी संवेदनाओं को भी समाहित करती है। इन कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों में परिस्थिति के अनुरूप सोचने-समझने का विवेक विकसित होता है और किस प्रकार अपने समय की सच्चाई को साहित्यिक रूप से अभिव्यक्त किया जाता है, उसकी प्रेरणा भी मिलती है। जैसा कि आधुनिक मनोविज्ञान का मानना है कि पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों में समझ विकसित करने के साथ उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करती है, यह गुण इस पाठ्यपुस्तक में मौजूद है।

इस लेख में पाठ्यपुस्तक *अंतरा* में निर्धारित कविताओं का विद्यार्थियों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, यह पाठ्यपुस्तक मानसिक विकास हेतु चेतनशीलता को प्रखर करती है। विद्यार्थियों के भीतर मनन एवं विचार-विमर्श का बोध उत्पन्न करती है। पाठ्यपुस्तक सामाजिक सत्य को पहचानने की शक्ति प्रदान करने के साथ विद्यार्थियों को मूल्यों के प्रति भी जागरूक करती है जो प्रगतिशील समाज के लिए आवश्यक है। इस पाठ्यपुस्तक में आधुनिक काव्य खंड की कविताओं को संकलित किया गया है। क्योंकि इस काव्य खंड में भारत के ऐतिहसिक घटनाक्रम को समाहित किया गया है तथा इस खंड की प्रत्येक कविता का अपना विशिष्ट संदर्भ है, जो इस लेख में बिंदुवार प्रस्तुत किया गया है। व्यक्तित्व विकास में पाठ्यपुस्तक की गुणात्मक भूमिका को भी इस अध्ययन में देखा गया है। विद्यार्थी एवं अध्यापक इन बिंदुओं को ध्यान में रखकर पाठ्यपुस्तक को पढ़ाते हैं तो निश्चित रूप से विद्यार्थियों पर उसका सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ ब्रिटानिका. 28 फ़रवरी, 2021 को https://www.britannica.com/science/psychology से प्राप्त किया गया है.

धूमिल. 2020–21. *अंतरा*. पृष्ठ संख्या 178. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

नागार्जुन. 2020–21. *अंतरा*. पृष्ठ संख्या 166. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

पंत, सुमित्रानंद. 2020–21. *अंतरा*. पृष्ठ संख्या 146. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

येत्रोव्सकी, ए.वी. 1982. *आयु वर्ग एवं शिक्षा मनोविज्ञान*. पृष्ठ संख्या 151. प्रगति प्रकाशन, दिल्ली.

वर्मा, महादेवी. 2020–21. *अंतरा*. पृष्ठ संख्या 153. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

वर्मा, श्रीकांत. 2020–21. *अंतरा*. पृष्ठ संख्या 172. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

शर्मा, नरेंद्र. 2020–21. *अंतरा.* पृष्ठ संख्या 159. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

श्रीवास्तव, ज्ञानानंद प्रकाश. 2002. *शिक्षा मनोविज्ञान— नवीन विचारधाराएँ.* पृष्ठ संख्या 62. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished